P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-10* June- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जैन दर्शन में अनेकान्तवादः वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता

अदिति शर्मा
व्याख्याता
इतिहास विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
जयपुर

सारांश

वर्तमान युग में विरोधी विचारधाराओं में समन्वय स्थापित करने के लिए अनेकान्तवाद अथवा स्याद्वाद की आवश्यकता है। यह सत्य को जानने एवं शान्ति को पाने का श्रेष्ठ साधन है। समाज में व्याप्त असहिष्णुता, अशान्ति, हिंसा, शोषण तथा संघर्ष के वातावरण को तिरोहित करने का उपाय अनेकान्तवाद है। यह विचारों की संकीर्णता को नष्ट कर व्यक्ति को उदार, उदात्त एवं सहनशील बनाता है। यह आशावादी दृष्टिकोण है जो प्रत्येक व्यक्ति की बात को सौजन्य व सौहार्दपूर्ण ढंग से सुनने के लिए अभिप्रेरित करता है। यह एक पद्धति है जो हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। अतः वर्तमान में अनेकान्तवाद प्रांसगिक है।

मुख्य शब्द : याद्वाद,अनेकान्त, सप्तभंगी नय, स्यात्, समभाव, समन्वय, आतंकवाद,सम्प्रदायिकता, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, उदात्त, दृष्टिकोण, बहुतत्ववादी, सहिष्णुता, विश्व कल्याण

प्रस्तावना

जैन दर्शन बहुतत्ववादी है। इसके अनुसार संसार में अनेक वस्तुएँ है। प्रत्येक वस्तु में अनेक धर्म होते हैं ''अनन्तधर्मकं वस्तु''।[1] वह एक ही साथ सत भी है, असंत भी, एक भी है, अनेक भी और अनित्य भी।[2] इस प्रकार अनेक विरोधी धर्म वस्तु में अन्तर्निहित है। इसका परिज्ञान हमें एकान्तिक दृष्टि से नहीं हो सकता उसके लिए अनेकान्तात्मक दृष्टि चाहिए। **अनेकान्त क्या है ?**वस्तु अथवासत्य का समग्र रूप से बोध कराने वाली दृष्टि ही अनेकान्त है। इसी दृष्टि को जैन दर्शन में अनेकान्तवाद कहा गया है। अनेकान्तवाद में दो शब्द निहित है– अनेक + अन्त। अनेक का अर्थ है एक से अधिक तथा अन्त शब्द का आशय धर्म से है। इस प्रकार अनेक धर्म सहित होना अनेकान्त है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान में जहाँ मनुष्य ने वैज्ञानिक एवं भौतिक प्रगति की है वहीं दूसरी ओर उसकी सुख–शान्ति समाप्त हो गयी है। नैतिक मूल्य समाप्त हो गये हैं। वैचारिक और शारीरिक हिंसा का बोलबाला है। नैराश्यता के इस काल में अनेकान्तवाद आशावादी दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह वह पथ है जिस पर चलकर मनुष्य विश्व को सुख–शान्तिमय बना सकता है। हिंसा, द्वेष, संघर्ष एवं विषमताओं का समाधान स्याद्वाद में निहित है। अनेकान्तवाद को व्यवहारिक दृष्टि से दैनिक जीवन में उतारने पर राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं यथा अशान्ति, युद्ध, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, परिवार विघटन, भ्रष्टाचार, महंगाई आदि का समाधान स्वतः ही हो सकता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अनेकान्तवाद की महत्ता को स्पष्ट करना एवं समस्याओं के समाधान हेतु प्रस्तुत करना ही प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

साहित्यिक पुनरावलोकन

उमा स्वामी द्वारा विरचित "तत्वार्थ सूत्र", आचार्य कुन्दकुन्द कृत "समय सार", "नियम सार", नेमिचन्द्र रचित "द्रव्य संग्रह", दत्त एवं चटर्जी की पुस्तक "भारतीय दर्शन", एवं डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा कृत "धर्म दर्शन की रूप–रेखा" आदि ग्रन्थों से प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन में सहायता प्राप्त हुई।

विश्व के पदार्थों, विचारों, तत्वों एवं धर्मों का विश्लेषण करने पर प्रतीत होता है कि सभी में सत्यता का कुछ न कुछ अंश निहित है। मनुष्य की शक्तियाँ मर्यादित है और बुद्धि सीमित है। वस्तु तत्व का यथार्थ एवं पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना सीमित क्षमता वाले मानव के लिए सदैव एक जटिल प्रश्न रहा है। तर्कबुद्धि की अपूर्णता तथा ऐन्द्रिक ज्ञान क्षमता के कारण वह सम्पूर्ण सत्य को एक साथ ग्रहण नहीं कर सकता। एक ही व्यक्ति एक ही समय में एक साथ पिता, पुत्र, पति एवं भाई हो सकता है। संखिया जहाँ आम लोगों की नजर में विष रूप है वहीं वैद्य उसका प्रयोग औषधि के रूप में करते हैं। अग्नि में पाचकत्व और दाहकत्व जैसे

दो परस्पर विरोधी धर्म एक साथ दिखाई पड़ते हैं। जल मनुष्य के जीवन का आधार है लेकिन उसमें डूबने पर वही जानलेवा सिद्ध होता है। ऐसी स्थिति में जबकि हमारा समस्त ज्ञान आंशिक, अपूर्ण तथा सापेक्षिक है हमें यह कहने का कोई अधिकार नहीं है कि मेरी दृष्टि अथवा विचार ही एकमात्र सत्य है। मनुष्य एक समय में वस्तु के सभी धर्मों एवं गुणों का ज्ञान नहीं पा सकता। किसी वस्तु के सम्बन्ध में उसका अभिप्राय आंशिक सत्य ही हो सकता है। इन सभी आंशिक सत्यों को एकत्र कर लिया जाए तो पूर्ण सत्य से साक्षात्कार किया जा सकता है।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में धर्माचार्यों ने विविध धर्मों, सिद्धान्तों व दर्शनों का प्रतिपादन किया । धर्माचार्यों के प्रति श्रद्धा तथा अन्तसः में व्याप्त आग्रह व अहंकार के कारण मनुष्य ने अपने मनोनुकूल सिद्धान्त व नियमों को ही अन्तिम सत्य माना तथा दूसरे धर्मानुयायी के मत एवं विचारों को हेय दृष्टि से देखा ।

असहिष्णुता, प्रतिस्पर्धा की ऐसी नैराश्यजनक स्थिति में महावीर स्वामी ने पूर्ण सत्य के दर्शन तथा सभी मतों मे समन्वय करने की अपेक्षा से विश्व के प्रत्येक प्रष्न, वस्तु एवं मत के सम्बन्ध में विचार करने की एक नई पद्धति को जन्म दिया, जिसमें दूसरों के अनुभूत सत्यों का निषेध नहीं करते हुए हम अपनी बात कह सके। इस कथन पद्धति को ''स्याद्वाद'' कहा जाता है। अनेकान्तवाद की विचारधारा ने ही स्याद्वाद को जन्म दिया है। इसलिए दोनों को पर्याय माना गया है। वस्तु की अनेक धर्मात्मकता का बोध कराने लिए स्यात् शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द अनेकान्त का वाचक भी है और द्योतक भी। स्याद्वाद महावीर की सत्य के प्रति निष्ठा का परिचायक है। सत्य के सही, निर्विरोध एवं पूर्ण उद्घाटन के लिए आवश्यक है कि हम किसी वस्तु के बारे में विचार व्यक्त करते समय उसके सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए अपनी बात भी प्रामाणिकता से कहे तथा दूसरों का कथन भी उदार, उदात्त भाव से सुने। महावीर सत्य का प्रगटन आग्रह में नहीं, अनाग्रह में मानते हैं। यह विरोध में नहीं अपितु समन्वय में प्रकट होता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि अनेकान्तवाद अथवा स्याद्वाद जैन दर्शन की अपनी मौलिक दृष्टि है परन्तु वैदिक और औपनिषदिक साहित्य का अध्ययन करते समय हमें अनेकान्त दृष्टि के सम्बन्ध में यत्र–तत्र उल्लेख प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद[3] में परस्पर विरोधी मान्यताओं में निहित सापेक्षिक सत्यता को स्वीकार करते हुए ''एकं सद् विप्राः बहुधा वदंति'' का उल्लेख हुआ है। उपनिषदों में अनेक स्थानों पर एकान्तवाद का निषेध किया गया है। बृहदारण्यकोपनिषद्[4] में ऋषि कहता है ''वह स्थूल भी नहीं है और सूक्ष्म भी नहीं है। वह ह्रस्व भी नहीं है और दीर्घ भी नहीं है''। तैत्तिरीयोपनिषद[5] परमसत्ता को मूर्त–अमूर्त, वाच्य–अवाच्य, विज्ञान–अविज्ञान, सत्–असत् रूप कहता है। निष्कर्षतः अनेकान्तिक दृष्टि का इतिहास अति प्राचीन है किन्तु एक सिद्धान्त, दर्शन एवं विचार पद्धति के रूप में यह महावीर स्वामी की देन है।

महावीर ने स्याद्वाद के अन्तर्गत प्रत्येक प्रश्न पर 7 पक्षों (नय) की अपेक्षा से विचार करके अपना मत रखने की पद्धति का आविष्कार किया जिसे ''सप्तभंगी नय'' कहा गया। सत्य की निरपेक्ष अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है। सम्पूर्ण सत्य को चाहे जाना जा सकता हो किन्तु कहा नहीं जा सकता। हमारी भाषा विधि–निषेधों की सीमाओं से घिरी हुई है। 'है' और 'नहीं है' ये हमारे कथन के दो प्रारूप है। किन्तु कभी–कभी हम अपनी बात को स्पष्टतया इन दो प्रारूपों में कहने में असमर्थ होते हैं।

ऐसी स्थिति में तीसरे विकल्प 'अवक्तव्य' का सहारा लिया जाता है। इन तीन भंगों से चार और भंगों (दृष्टियों) का उदय होता है। इस प्रकार विधि–निषेध और अवक्तव्यता से जो 7 प्रकार का वाक्य विन्यास बनता है उसे सप्तभंगी नय कहा जाता है।[6] सप्तभंगी नय निम्नलिखित प्रकार से है–

1. स्यात् अस्ति 2. स्यात् नास्ति 3. स्यात् अवक्तव्य 4.स्यात् अस्ति च नास्ति च 5. स्यात् अस्ति च अवक्तव्य च 6. स्यात् नास्ति च अवक्तव्य च 7. स्यात् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्य च

स्याद्वाद हमारे विचारों एवं निर्णयों को प्रस्तुत करने का निर्दोष व अहिंसक तरीका है। यह अविरोधपूर्ण कथन की एक शैली है। इस कथन पद्धति में वक्ता अपनी बात इस ढंग से कहता है कि उसका कथन अपने प्रतिपक्षी कथनों का पूर्ण निषेधक न बने। इसमें एक पक्ष अपने प्रतिपक्ष के प्रति उदार भाव रखते हुए यह मानता है कि मेरे द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण जहाँ सत्य है वहीं अन्य दृष्टिकोणों में भी सत्यता हो सकती है यह सिद्धान्त सर्वधर्म समभाव एवं धार्मिक सहिष्णुता का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अनेकान्तवाद सब ओर से खुला मानस चक्षु हैं। ज्ञान, विचार और आचरण के विषय को यह संकीर्ण दृष्टि से देखने का निषेध करता है और सत्य को अधिकाधिक दृष्टिकोणों से जानने का समर्थन करता है। बौद्धिक अहिंसा को व्यक्त करने वाला यह सिद्धान्त जैन दर्शन के अहिंसात्मक विचार का प्रतीक है। सैद्धान्तिक रूप से दर्शन व चिन्तन के क्षेत्र में अनेकान्त व स्याद्वाद की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता इसकी व्यावहारिक दैनिक जीवन में भी है। वर्तमान वैश्विक पटल पर दृष्टिगोचर प्रतिस्पर्धा, कटुता, असहिष्णुता और नैराश्यपूर्ण अवस्था में यह चिन्तन शैली पर्याप्त प्रकाश, स्फूर्ति, निर्मलता और आश्वासन प्रदान करती है। अनेकान्त हमें जीवन में दूसरों के लिए भी स्थान सुरक्षित रखने के लिए प्रेरित करता है। यह हमारे चिन्तन को निर्दोष करता है। यह विचारधारा दार्शनिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के विरोधी स्वरों के मध्य समन्वय की उदार और विधायक दृष्टि प्रस्तुत करती है।

वैष्विक परिदृश्य पर नजर डालने पर हम पाते हैं कि आतंकवादी गतिविधियों, विध्वंसक परमाण्विक युद्धास्त्रों तथा साम्प्रदायिक हिंसा के कारण संसार तृतीय विश्व युद्ध के कगार पर खड़ा है। चहुंओर तनाव, हिंसा, युद्ध, अनिश्चितता तथा संदेह का वातावरण है। साम्प्रदायिकता, असहिष्णुता, नक्सलवाद, आतंकवाद, प्रदूषण, महगांई, पारिवारिक विघटन, अतिभौतिकता, भ्रष्टाचार, जातिवाद, क्षेत्रीयता, आरक्षण, लिंग भेद आदि राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक समस्याओं से मनुष्य जूझ रहा है। सामुदायिक वैमनस्य बढ़ता जा रहा है और नैतिकता का अवमूल्यन हो

रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में आवश्यकता है, नैतिक एवं आध्यात्मिक तत्वों पर आधरित मूल्यों की। अनेकान्तवाद यही मूल्य प्रदान करता है। अहिंसा, साम्प्रदायिक सदभाव, सत्य, समानता,सहिष्णुता के तत्व अनेकान्त में अन्तर्निहित है। शान्ति, सहिष्णुता, समन्वय–व्यवहारिक अवधारणायें है और ये मानव मस्तिष्क में ही पैदा होती है एवं इन्हें पैदा करने वाला कारक अनेकान्तवाद है। अनेकान्त को सिद्धान्त से निकालकर व्यवहारिक धरातल पर अपनाने से हिंसा, द्वेष, विरोध, वैमनस्य स्वतः ही समाप्त हो जाएगें। परिणामतः विश्व में शान्ति की स्थापना होगी।एक मत का दूसरे मत से, एक विचार का दूसरे विचार से विरोध होता है लेकिन अनेकान्तवाद उस विरोध का परिहार करके उनमें समन्वय स्थापित करता है। जहाँ सिर्फ अपनी ही बात का आग्रह होता है, सत्य हमसे दूर हो जाता है। किन्तु जहाँ अपनी बात के साथ–साथ दूसरे की बात व विचारों की भी सहज स्वीकृति होती है सत्य वहीं अपने श्रेष्ठ स्वरूप में प्रस्तुत होता है। अनेकान्त दृष्टि सिर्फ अपनी ही बात नहीं बल्कि सामने वाले की बात को भी धैर्यपूर्वक सुनती है। अनेकान्तिक दृष्टि वाला व्यक्ति यह सोचता है कि मैं जो कह रहा हूँ वही एक मात्र सत्य नहीं है अपितु सत्य का एक पक्ष मात्र है, उसमें दूसरों की बात सुनने व सहन करने की शक्ति का विकास होता है। इस प्रकार एक–दूसरे की आवश्यकता और सीमा को ध्यान में रखकर कार्य करने से विवाद की सम्भावनाएँ समाप्त हो जायेंगी। हाल ही में पेरिस जलवायु समझौते से अमेरिका का पीछे हटना, कश्मीर मसले पर हो रहा निरन्तर संघर्ष, सीरिया का गृह युद्ध, कई देशों में आतंकवादी हमले ये सभी ऐसे मसले है जिन पर अनेकान्तिक दृष्टि से विचार कर समाधान किया जा सकता है।

निष्कर्ष

आज के वैचारिक संकुलता से परिपूर्ण राजनैतिक जीवन में अनेकान्तवाद के दो व्यावहारिक फलित वैचारिक सहिष्णुता और समन्वय अत्यन्त उपादेय है। विरोधी पक्ष द्वारा की जाने वाली आलोचना के प्रति सहिष्णु होकर, स्वयं के दोषों को समझना और उन्हें दूर करने का प्रयास करना वर्तमान राजनैतिक जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। धर्म व दर्शन में प्रतिस्पर्धा एवं कटुता का पटाक्षेप अनेकान्त द्वारा ही किया जा सकता है। परिवार के शान्तिपूर्ण वातावरण के निर्माण में यह सहायक है। आज के युग में ऐसे दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो लोगों को आग्रह और मतान्धता से ऊपर उठने के लिए दिषा–निर्देश दे सके। व्यक्ति, समाज और देश में हमेशा से मतभेद रहे है और रहेगें। अतः एक–दूसरे के दृष्टिकोण की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अपितु अनेकान्तवाद को अपनाते हुए सभी के विचारों का सम्मान करना चाहिये। यह वैचारिक उदारता और समन्वय की दृष्टि है जिससे मानव जाति को संघर्षो से निराकरण में सहायता मिल सकती है। यह आत्मशोधन की प्रक्रिया का मूल मंत्र है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आचार्य गुणरत्न, षड्दर्शन समुच्चय, वाराणसी, पृ. 55।*
2. *समयसार, 10.247*
3. *ऋग्वेद, 1.164.46*
4. *बृहदारण्यकोपनिषद्, 3.8.8*
5. *तैत्तिरीयोपनिषद्, 2.6*
6. *सप्तभिः प्रकारैर्वधन विन्यासः सप्तभंगी तीगीयते।*
7. *स्याद्वाद मंजरी कारिका की टीका।*